अधिगम उपलब्धियाँ

- कहानी पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कहानी को एकांकी के रूप में बदलता है।

ज्ञानार्जन के विभिन्न स्रोत हैं।
इस पर एक लोककथा पढ़ें।

लोककथा

शाहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा?

शाहंशाह अकबर गंभीर चर्चा में मग्न विद्वानों के एक समूह को देख रहे थे। वे बीरबल की ओर मुड़कर बोले, "बीरबल, मैं बहुत चतुर नहीं हूँ। बहुत-सी ऐसी चीज़ें हैं जिनके बारे में मैं नहीं जानता। मैं हर चीज़ को सीखना चाहता हूँ। कल से मेरी पढ़ाई शुरू हो, इसका इंतज़ाम करो।"

वैयक्तिक वाचन

शब्दकोश की सहायता से
अपरिचित शब्दों के अर्थ
ढूँढ़ निकालें।

दल में चर्चा

"बहूत सी ऐसी चीज़े है जिनके बारे में मैं नहीं जानता "–इस कथन से अकबर का कौन सा मनोभाव प्रकट होता है?

अकबर ने क्यों ऐसा कहा होगा ?

दलों की प्रस्तुति

२-३ छात्रों का सस्वर वाचन

अकबर का स्वागत एक विचित्र दृश्य ने किया–

दृश्य कौन–सा था ?

- चित्र में कौन कौन हैं ?
- चित्र में अनेक पेशे और पेशेवर हैं।
- इनकी तालिका बनाएँ...

पेशेवर	पेशा
• किसान	• खेती का काम करता है।
• सुनार	• सोने का काम करता है।
•	• .....
•	•
•	•
•	•

प्रस्तुति और चर्चा

बीरबल का इन लोगों को दरबार में बुला लाने का उद्देश्य क्या होगा ?

"इन सब का क्या मतलब है?" शाहंशाह गरजे। "मैंने तुमसे ऐसे लोगों को लाने के लिए कहा था जो मुझे कुछ सिखा सकें और तुमने मेरा महल, राज्य को आधी जनता से भर दिया? अब जवाब दो!"

"माफ़ी चाहता हूँ, जहाँपनाह, मैंने तो बस, आपके आदेशों का पालन किया है।" बीरबल ने जवाब दिया। "गुस्ताख़ी माफ़ हो, पर क्या जहाँपनाह रेत में घंटों खेलकर अपना मनोरंजन करना जानते हैं?"

"नहीं, नहीं, नहीं, हज़ार बार नहीं!" अकबर गुस्से से लाल-पीले होकर चिल्लाए।

"तब जहाँपनाह," बीरबल ने शांति से कहा, "इस दरबार में मौजूद हर शख्स आपको कुछ न कुछ सिखा सकता है। हरेक ऐसा कुछ जानता है जो दूसरों को नहीं पता है। प्रत्येक के पास कुछ हुनर है, कुछ ज्ञान है, दिल या दिमाग की कोई ख़ासियत है। तो सभी शिक्षक भी हैं और विद्यार्थी भी!"

वैयक्तिक वाचन

बीरबल ने अकबर से कौन-कौन से प्रश्न पूछें?

"सभी शिक्षक भी है और विद्यार्थी भी...” इसका मतलब क्या था ?

दलों में चर्चा

- दलों की प्रस्तुति
- संक्षिप्तीकरण
- २-३ छात्रों का सस्वर वाचन

- बीरबल ने क्या-क्या प्रश्न पूछें?
- अकबर का जवाब क्या था?

शाहंशाह समझ गए कि बीरबल के कहने का क्या मतलब है। वे हँस दिए, "तब तो तुम भी एक विद्यार्थी हो, बीरबल? मैं तो सोचता था कि तुम्हें कोई कुछ नहीं सिखा सकता!"

शाहंशाह बूढ़ी महिला के शब्दों की सादगी से प्रभावित हुए। वे उनके आगे अदब से झुके और फिर मुड़कर बीरबल से कहा, "तुम सच में भाग्यशाली हो जो तुम्हें इतनी समझदार गुरु मिलीं।"

यह बूढ़ी महिला किन-किन की प्रतिनिधि हो सकती है?

वाचन प्रक्रिया

"हमेशा ही सीखता हुँ " – इससे
क्या मतलब हैं ?
यहाँ "हमेशा " का तात्पर्य क्या है ?

चर्चा

माँ

गुरू

पडोसिन

दोस्त

.....

जन्म से मृत्यु तक चलनेवाली प्रक्रिया है शिक्षा

यहाँ बूढ़ी महिला किन –किन की प्रतिनिधि हो सकती है?

इस पाठभाग से कौन–सा आशय आपको मिला ?

ज्ञानार्जन जन्म से लेकर मृत्यु तक
चलनेवाली प्रक्रिया है।
हर व्यक्ति में कोई न कोई हूनर है।

हम ने एक लोककथा पढ़ी..

- कहानी के मुख्यपात्र कौन–कौन हैं?
- उनकी वेशभूषा कैसी है?
-

पात्र	वेश-भूषा

- इस कहानी के कितने प्रसंग है?
- वे क्या–क्या है?
- प्रत्येक प्रसंग कब और कहाँ होता है?

स्थान	समय

प्रत्येक प्रसंग में इस कहानी के पात्रों के बीच का संवाद क्या होगा ?

एक प्रसंग का संवाद तैयार करें...

२–३ प्रस्तुति

कहानी को एकांकी के रूप में लिखने का निर्देश।

- केवल संवाद जोड़ने से एकांकी बन जाती है?
- प्रसंग की भूमिका क्या है?
-

टीचर वर्शन

पहचान (एकांकी)

पात्र:

अकबर बादशाह

बीरबल

बूढ़ी महिला

पहला दृश्य

(राज दरबार, सवेरे नौ बजे, बादशाह अकबर और बीरबल चर्चा में लगे विद्वानों को देख रहे हैं। दोनों ने राजकीय पोशाक पहने हैं)

अकबर : बीरबल, कल से मेरी पढ़ाई का इंतज़ाम करो।

बीरबल : जहाँपनाह! क्या? पढ़ाई का इंतज़ाम क्यों?

अकबर : बीरबल, मैं बहुत चतुर नहीं हूँ। बहुत-सी ऐसी चीज़े है, जिनके बारे में मैं नहीं जानता। मैं सीखना चाहता है।

दूसरा दृश्य

(अगली सुबह, बादशाह अकबर दरबार में प्रवेश करते हैं। साथ बीरबल भी है।)

अकबर : (अचंभे में) बीरबल, हम क्या देख रहे है? इतनी भीड़ क्यों?

बीरबल : हुजूर! आपने कल बताया था, कुछ सीखना है।

अकबर : इसके लिए देश की आधी जनता से राजमहल को क्यों भर दिया?

बीरबल : माँफी चाहता हुँ जहाँपनाह! क्या आप जानते है कैसे रेत में घंटों खेलकर मनोरंजन करते है? और बुवाई कब करनी है?

अकबर : नहीं, पर उनसे क्या?

बीरबल : कचरे में से उपयोगी चीज़ों को कैसे छाँटना है? और कहाँ हरे-भरे चरागाह हैं?

अकबर : (गुस्से से) नहीं, नहीं, हज़ार बार नहीं।

बीरबल : (शांत स्वर में) जहाँपनाह! यहाँ मौजूद हर शख्स आपको कुछ न कुछ सिखा सकता है।

अकबर : कैसे?

बीरबल : हर व्यक्ति कुछ जानता है, जो दूसरों को पता नहीं। प्रत्येक के पास कुछ ज्ञान है, कुछ हुनर है।

अकबर : तो सभी शिक्षक भी है और विद्यार्थी भी।

बीरबल : ठीक है, जहाँपनाह!

(बीरबल भीड़ की ओर जाता हैं। बूढ़ी महिला का हाथ थामकर अकबर के पास ले आते हैं।)

बीरबल : ये मेरे पहले और श्रेष्ठ गुरुओं मे से एक है।

(बूढ़ी महिला सलाम करती है)

महिला : हुजूर, सब कुछ सीखना संभव नहीं है लेकिन अच्छा इंसान कैसे बनना है यह सब को सीखना चाहिए।

(अकबर का चेहरा खुशी से फूल उठता है)

अकबर : बीरबल, तुम बडे भाग्यशाली हो, तुम्हें इतने बडे गुरू मिले हैं।

रंगमंच

रंग सज्जा का विवरण है।

पात्र

आयु, वेशभूषा, चाल-चलन,
हाव-भाव का संकेत है।

कथोपकथन

संवाद पात्रानुकूल है।
भाषा स्वाभाविक है।

परिकल्पना एवं प्रस्तुतीकरण

अशोक कुमार

जी.एच.एस.एस. पेरुम्पलम

9447378576